INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

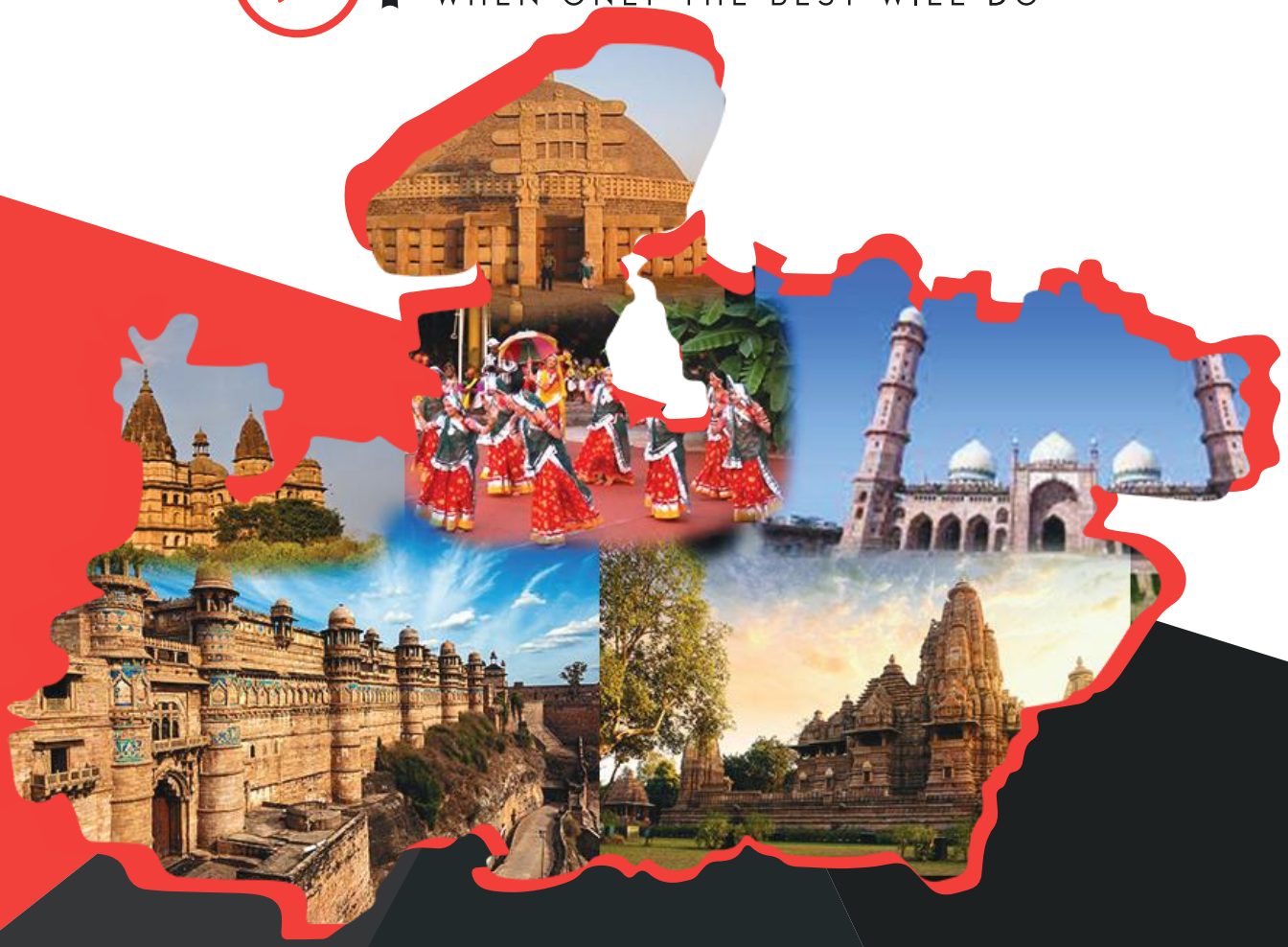

MPPSC-PCS

MADHYA PRADESH PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

भाग -7 दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान + लोकप्रशासन + समाजशास्त्र

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 7

दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान + लोकप्रशासन + समाजशास्त्र

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2023)**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	(इकाई – 1)	
	दर्शनशास्त्र	
1.	दार्शनिक / विचारक, समाज सुधारक ❖ सुकरात ❖ प्लेटो ❖ स्वामी विवेकानंद ❖ स्वामी दयानंद सरस्वती ❖ रवीन्द्र नाथ टैगोर ❖ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ❖ महर्षि अरविंद ❖ चार्वाक दर्शन ❖ महात्मा बुद्ध ❖ आदि शंकराचार्य ❖ गुरु नानक देव ❖ कबीर और नानक में समानता ❖ गोस्वामी तुलसीदास ❖ सावित्रीबाई फुले का जीवन परिचय	1-15
	(इकाई – 2)	
	मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन	
2.	मनोवृत्ति • मनोवृत्ति क्या हैं • मनोवृत्ति की विशेषताएं • मनोवृत्ति के अध्ययन की आवश्यकता क्यों ? • व्यक्ति के व्यवहार का पता लगाने में सहायक • मनोवृत्ति संरचना के घटक • संज्ञानात्मक घटक • भावनात्मक घटक • व्यवहारात्मक घटक • नकारात्मक मनोवृत्ति	16-43

	• मनोवृत्ति के कार्य/ प्रकार्य • मनोवृत्ति एवं अभिक्षमता • मनोवृत्ति एवं अभिक्षमता में अंतर • मनोवृत्ति एवं व्यवहार • पूर्वाग्रह तथा विभेद • सत्यनिष्ठा का महत्व • अभिक्षमता /अभिरुचि • अभिक्षमता की विशेषताएँ • अभिक्षमता व बुद्धिमत्ता • अभिवृत्ति एवं सत्यनिष्ठा • गैर-पक्षधरता / असमर्थकवादी • वस्तुनिष्ठाता के समाधान • लोकसेवा के प्रति समर्पण • समानुभूति एवं सहानुभूति • संवेगिक बुद्धि :- अवधारणा ,प्रशासन / शासन में इसकी उपयोगिता एवं अनुप्रयोग • व्यक्तिगत भिन्नताएँ • व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा • व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार • शारीरिक विभिन्नताएँ • नैतिक विभिन्नताएँ • सांस्कृतिक विभिन्नताएँ • प्रजातीय विभिन्नताएँ • धार्मिक विभिन्नताएँ • व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण	
	(इकाई – 3)	
	लोक प्रशासन	
3.	मानवीय आवश्यकताएं एवं अभिप्रेरणा • मानवीय आवश्यकता की विशेषताएं • मानवीय आवश्यकताओं का वर्गीकरण या पिरामिड • शारीरिक या भौतिक आवश्यकताएं • आत्म प्रत्यक्षीकरण की आवश्यकता • अभिप्रेरणा	43-57

	• शारीरिक या भौतिक आवश्यकताएं • सामाजिक आवश्यकताएं • सम्मान की आवश्यकता • आत्म प्रत्यक्षीकरण की आवश्यकता • अभिप्रेरणा • अभिप्रेरणा के उद्देश्य • अभिप्रेरणा का महत्व • अभिप्रेरणा के प्रकार • अभिप्रेरणा की विचारधारा • लोक प्रशासन में मूल्य • लोक प्रशासन में नैतिकता • भारतीय दार्शनिक अवधारणा के रूप में शासन या प्रशासन • प्रशासन में नैतिक तत्त्व • प्रशासन में सत्यनिष्ठता का वर्गीकरण • सूक्ष्म और वृहद उत्तरदायित्व • भारत में लोक सेवकों से सम्बंधित आचार-नियम	
	(इकाई – 4)	
	भ्रष्टाचार	58-79
4.	भ्रष्टाचार ❖ भ्रष्टाचार की परिभाषा ❖ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अनुसार ❖ भ्रष्टाचार का क्षेत्र एवं स्वरूप ❖ भारत में प्रमुख घोटाले ❖ भ्रष्टाचार के प्रकार ❖ भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव ❖ कार्य / कार्य प्रणाली ❖ भ्रष्टाचारशोधी कानूनों का निर्माण ❖ भ्रष्टाचार का मापन ❖ लोकपाल और लोकायुक्त	
	(इकाई – 5)	
	केस स्टडीज	

5.	केस स्टडी के उद्देश्य • केस स्टडी की उपयोगिता • केस स्टडी की विशेषताएं • केस अध्ययन	79-84
6.	मानव संसाधन : उपलब्धता नियोजित एवं उत्पादकता व रोजगार के विभिन्न चलन • मानव संसाधन विकास और शिक्षा • सामाजिक समरसता के घटक	84-89
7.	समाजशास्त्र • समाजीकरण • भारतीय सभ्यता और संस्कृति का वर्तमान स्वरूप एवं महत्व • वर्ण व्यवस्था • विवाह की पद्धतियों • आश्रम व्यवस्था • पुरुषार्थ • सामुदायिक विकास कार्यक्रम	90-102
8.	सामुदायिक विकास प्रक्रिया • अर्थ एवं परिभाषा • पंचायती राज सामुदायिक विकास गैर सरकारी • कुटुम्ब न्यायालय • जनसंख्या एवं संबंधित मुद्दे • जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत • जनसांख्यिकीय लाभांश • राष्ट्रीय जनसंख्या नीति	102-113
9.	भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ • स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हेतु उपाय • विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) • WHO की स्थापना का उद्देश • WHO की संरचना • विश्व स्वास्थ्य संगठन और भारत	114-128

	• भारत में WHO द्वारा किये गए स्वास्थ्य संबंधी प्रयास • कुपोषण के कारण एवं प्रभाव • कुपोषण दूर करने के लिए सरकार द्वारा किये गए प्रयास • पूरक पोषण कार्यक्रम हेतु शासकीय कार्यक्रम • स्वास्थ्य नीति एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम • भारत में स्वास्थ्य योजनाएं	

दर्शनशास्त्र (इकाई – I)

अध्याय – I

दार्शनिक / विचारक, समाज सुधारक

सुकरात :- यह ग्रीस का प्रमुख विचारक हैं। ग्रीस में सुकरात से ही नैतिक विचारों की शुरुआत हुई सुकरात के द्वारा सेफिस्टो की आलोचना की गई क्योंकि अगर नैतिक नियमों को आत्मनिष्ठ माना गया तो सामाजिक व्यवस्था स्थापित नहीं की जा सकती। अतः नैतिक नियम वस्तुनिष्ठ होने चाहिए।

मानव जीवन के कल्याण के लिए आवश्यक है, कि व्यक्ति सद् गुणी जीवन जीये।

सुकरात के अनुसार सद् गुण एक है, वह ज्ञान है, यहाँ ज्ञान का अर्थ तथ्यात्मक ज्ञान से नहीं है, ज्ञान का वास्तिविक अर्थ है आत्मज्ञान अर्थात् सही - गलत, शुभ - अशुभ, उचित - अनुचित के बीच सटीक भेद कर पाना।

सुकरात के अनुसार ज्ञान की शुरुआत अज्ञान से ही होती है। इसका प्रसिद्ध कथन है - "मुझे मेरे अज्ञान का ज्ञान है "

सुकरात के अनुसार अन्य सद् गुण जैसे - विवेक, साहस, संयम, आदि ज्ञान के ही रूप हैं।

इसे सद् गुणों की एकता का सिद्धांत कहा जाता है।

सुकरात ने शारीरिक सुख की बजाय मानसिक शांति और स्थिरता को अधिक महत्त्व दिया है। इसका प्रसिद्ध कथन है -

मैं सभी जीवित लोगों में सबसे बुद्धिमान हूँ, क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ।"

सुकरात के अनुसार सद्गुण :-

कथन : (i) जहाँ सम्मान है, वहाँ डर है, पर ऐसी हर जगह सम्मान नहीं है जहाँ डर है, क्योंकि संभवतः डर सम्मान से ज्यादा व्यापक है।"

(ii) "इस दुनिया में सम्मान से जीने का सबसे महान तरीका है, कि हम वो बनें जो हम होनें का दिखावा करते हैं।"

(iii) सिर्फ जीना मायनें नहीं रखता सही तरीके से जीना मायनें रखता है।"

प्लेटो :- यह सुकरात का शिष्य था।

इसकी प्रमुख पुस्तकें - (i) रिपब्लिक (ii)फिलेब्स

प्लेटों के कथन :

(I) "सोचने का मतलब है कि आपकी आत्मा खुद से बातचीत कर रही है।"

(ii) "साहस ये जानना है कि किससे नहीं डरता है।"

(iii) "जो अच्छा सेवक नहीं है, वो अच्छा मालिक कभी नहीं बन सकता है।"

(iv) "मजबूरी में अर्जित किया गया ज्ञान मन पर पकड़ नहीं बना पाता।"

प्लेटो का प्रमुख सिद्धांत :-

(a) प्रत्यय का सिद्धांत :- ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिये प्लेटो ने यह सिद्धांत दिया।

प्लेटो ने एक 'प्रत्ययों के जगत की कल्पना की। इसके अनुसार भौतिक जगत असत्य और अवास्तविक है जबकि प्रत्ययों का जगत सत्य और वास्तविक है, सभी वस्तुएँ प्रत्ययों की अपूर्ण प्रतिकृतियाँ हैं।

- प्रत्यय अमूर्त, अनश्वर और पूर्ण होते हैं। वास्तविक ज्ञान प्रत्ययों का ज्ञान है।

सुकरात के अनुसार वही व्यक्ति सद् गुणी है जो कि बुद्धि के द्वारा 'सद् गुणों के प्रत्यय ' को जान चुका है।

- सबसे महत्त्वपूर्ण प्रत्यय 'शुभ का प्रत्यय ' है। यदि कोई व्यक्ति शुभ के प्रत्यय को जान लेता है तो उसमें सभी सद् गुण स्वतः ही आ जाते हैं।

(b) प्लेटो का न्याय का सिद्धांत :- प्लेटो ने तीन प्रकार के न्याय बताये हैं -

(i) व्यक्ति में न्याय :- इसके अनुसार आत्मा के तीन पक्ष होते हैं जिनके तीन सद् गुण होते हैं। बुद्धि का सद् गुण - विवेक। संवेग का सद् गुण - साहस। इच्छा का सद् गुण - संयम।

यदि तीनों सद्गुणों के बीच संतुलन बनाए रखा जाए तथा व्यक्ति अपने प्रधान सद् गुण के अनुसार आचरण करें तब व्यक्ति में न्याय स्थापित होता है।

(ii) समाज में न्याय :- प्लेटो के अनुसार समाज को प्रधान सद् गुणों के अनुसार कार्य का विभाजन किया गया है।

प्रत्येक वर्ग को उसे आवंटित कार्य को ही करना चाहिए तथा दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इससे समाज में न्याय की स्थापना होती है।

(iii) राज्य में न्याय :- प्लेटो के अनुसार वह राज्य न्यायपूर्ण है जिसका राजा दार्शनिक है। ऐसे राज्य को 'यूटोपिया' कहा गया है।

प्लेटो के अनुसार 4 मुख्य सद् गुण हैं -

विवेक, साहस, संयम, न्याय।

इनमें न्याय सबसे महत्त्वपूर्ण है।

अरस्तु :- अरस्तु ने प्लेटो की आलोचना की तथा प्रत्ययों के जगत को कल्पना मात्र माना।

अरस्तु के अनुसार सद् गुणों की संख्या को चार तक सीमित नहीं किया जा सकता है। ऐसा कोई राज्य स्थापित नहीं किया जा सकता है जो पूर्णतः न्यायपूर्ण हो। अतः यूटोपिया मात्र एक कल्पना है।

प्लेटो ने सद् गुणों को जन्मजात माना है जबकि अरस्तु के अनुसार सद् गुण जन्मजात नहीं होते हैं। इन्हें अर्जित किया जाता है। अरस्तु की नीतिशास्त्र का जनक कहा जाता है। क्योंकि इसके द्वारा नीतिशास्त्र की पहली पुस्तक लिखी गई - "निकोमेकियन एथिक्स"

अरस्तु के अनुसार जीवन का परम उद्देश्य यूडोमोनिया की प्राप्ति है। जिसका अर्थ है - 'आनंद।

यदि व्यक्ति की क्षमताओं और वास्तविकता के बीच अन्तर अधिक हो तब इसमें तनाव, चिन्ता और घबराहट रहेगी।

यदि अन्तर कम हो जाता है तो व्यक्ति आनंद की प्राप्ति करता है।

यूडेमोनिया की प्राप्ति के लिए सद् गुणी जीवन आवश्यक है।

अरस्तु के अनुसार विभिन्न सद् गुणों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(I) बौद्धिक सद् गुण :- विवेक, (यह अध्ययन से प्राप्त होते हैं)

(2) नैतिक सद् गुण :- साहस, संयम (इन्हें अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है)

अरस्तु के अनुसार सबसे महत्त्वपूर्ण सद् गुण 'मध्यम मार्ग' है।

(iv) धार्मिक दबाव - व्यक्ति पर पाप - पुण्य, स्वर्ग - नरक, तथा ईश्वर का दबाव होता है जिससे व्यक्ति अधिकतम लोगों के सुख के लिए कार्य करता है।

बेन्थम एक निकृष्ट सुखवादी है क्योंकि यह सुख में केवल मात्रात्मक भेद को स्वीकार करता है अर्थात् सुख अधिक और कम हो सकता है यह उच्चकोटि और निम्नकोटि का नहीं होता है।

बेन्थम के अनुसार सुख को मापा भी जा सकता है। इसके लिए बेन्थम द्वारा सुखकलन का सिद्धांत दिया गया

सुख को सात कारकों के आधार पर मापा जा सकता है -

(a) निश्चितता (b) निकटता (c) अवधि
(d) तीव्रता (e) शुद्धता (f) उत्पादकता
(g) व्यापकता

<u>प्रसिद्ध भारतीय सामाजिक सुधारक</u>

भारतीय समाज सुधारकों के निरंतर प्रयासों को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा भी मान्यता दी गई थी। स्वामी विवेकानंद, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, दयानंद सरस्वती, राजा राम मोहन राय और अन्य भारतीय हस्तियों ने महिलाओं के विकास और ज्ञान के लिए बात की। ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय समाज सुधारकों ने भी पश्चिमी शिक्षा को लोकप्रिय बनाया। सबसे प्रमुख भारतीय समाज सुधारकों में, महात्मा गांधी, श्रीराम शर्मा आचार्य, वीरचंद गाँधी, गोपाल हरि देशमुख, जमनालाल बजाज, बालशास्त्री जम्भेकर, जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे, धोंडो केशव कर्वे, एनी बेसेंट उल्लेखनीय हैं।

(I) **स्वामी विवेकानंद:** स्वामी विवेकानंद एक नव्य वेदांती विचारक हैं, क्योंकि इन्होंने ब्रह्म की सत्ता के साथ भौतिकवाद को भी स्वीकार किया है। हालांकि स्वामी विवेकानंद ने किसी विशेष सामाजिक सुधार की शुरुआत नहीं की थी, लेकिन उनके भाषण और लेखन सभी प्रकार की सामाजिक और धार्मिक बुराइयों के खिलाफ थे।

दर्शन में स्थान दिया और इस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक बने-बनाए ढर्रे से हटाकर उसमें नवाचार की गुंजाइश पैदा की। मध्यकाल में कबीरदास जैसे क्रांतिकारी विचारक पर महात्मा बुद्ध के विचारों का गहरा प्रभाव दिखता है। डॉ अंबेडकर ने भी वर्ष 1956 में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले बौद्ध धर्म अपना लिया था और तर्कों के आधार पर स्पष्ट किया था कि क्यों उन्हें महात्मा बुद्ध शेष धर्म-प्रवर्तकों की तुलना में ज़्यादा लोकतांत्रिक नज़र आते हैं। आधुनिक काल में राहुल सांकृत्यायन जैसे वामपंथी साहित्यकार ने भी बुद्ध से प्रभावित होकर जीवन का लंबा समय बुद्ध को पढ़ने में व्यतीत किया।

इस आलेख में बुद्ध के जीवन वृत्तांत, उनके दर्शन के सकारात्मक व नकारात्मक पहलूओं तथा बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर विमर्श किया जाएगा।

महात्मा बुद्ध: जीवन वृत्तांत

- महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल की तराइयों में स्थित लुम्बिनी में 563 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था।
- यह सर्वविदित है कि युवावस्था में उन्होंने मानव जीवन के दुखों को देखा जैसे रोगी व्यक्ति, वृद्धावस्था एवं मृत्यु। इसके विपरीत एक प्रसन्नचित्त संन्यासी से प्रभावित होकर बुद्ध 29 वर्ष की अवस्था में सांसारिक जीवन को त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े।
- महात्मा बुद्ध ने 528 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में एक पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए आत्म बोध प्राप्त किया।
- वैशाख पूर्णिमा के दिन ही 483 ईसा पूर्व में कुशीनारा नामक स्थान पर महात्मा बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ।
- उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने राजगृह में एक परिषद का आह्वान किया, जहाँ बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाओं को संहिताबद्ध किया गया। इन शिक्षाओं को पिटकों के रूप में समानुक्रमित करने के लिये चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया जिसके पश्चात् तीन मुख्य पिटक बने।
- विनय पिटक (बौद्ध मतावंलबियों के लिये व्यवस्था के नियम), सुत पिटक (बुद्ध के उपदेश सिद्धांत) तथा अभिधम्म पिटक (बौद्धदर्शन), जिन्हें संयुक्त रूप से त्रिपिटक कहा जाता है। इन सब को पाली भाषा में लिखा गया है।

बुद्ध दर्शन के सकारात्मक पहलू

- बुद्ध के दर्शन का सबसे महत्त्वपूर्ण विचार **'आत्म दीपो भवः'** अर्थात **'अपने दीपक स्वयं बनो'**। इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति को अपने जीवन का उद्देश्य या नैतिक-अनैतिक प्रश्न का निर्णय स्वयं करना चाहिये। यह विचार इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह ज्ञान और नैतिकता के क्षेत्र में एक छोटे से बुद्धिजीवी वर्ग के एकाधिकार को चुनौती देकर हर व्यक्ति को उसमें प्रविष्ट होने का अवसर प्रदान करता है।
- बुद्ध के दर्शन का दूसरा प्रमुख विचार 'मध्यम मार्ग' के नाम से जाना जाता है। सूक्ष्म दार्शनिक स्तर पर तो इसका अर्थ कुछ भिन्न है, किंतु लौकिकता के स्तर पर इसका अभिप्राय सिर्फ इतना है कि किसी भी प्रकार के अतिवादी व्यवहार से बचना चाहिये।
- बुद्ध दर्शन का तीसरा प्रमुख विचार 'संवेदनशीलता' है। यहाँ संवेदनशीलता का अर्थ है दूसरों के दुखों को अनुभव करने की क्षमता। वर्तमान में मनोविज्ञान जिसे समानुभूति कहता है, वह प्रायः वही है जिसे भारत में संवेदनशीलता कहा जाता रहा है।
- बुद्ध दर्शन का चौथा प्रमुख विचार यह है कि वे परलोकवाद की बजाय इहलोकवाद पर अधिक बल देते हैं। गौरतलब है कि बुद्ध के समय प्रचलित दर्शनों में चार्वाक के अलावा लगभग सभी दर्शन परलोक पर अधिक ध्यान दे रहे थे। उनके विचारों का सार यह था कि इहलोक मिथ्या है और परलोक ही वास्तविक सत्य है। इससे निरर्थक कर्मकांडों तथा अनुष्ठानों को बढ़ावा मिलता था।
- बुद्ध ने जानबूझकर अधिकांश पारलौकिक धारणाओं को खारिज किया।
- बुद्ध दर्शन का पाँचवा प्रमुख विचार यह है कि वे व्यक्ति को अहंकार से मुक्त होने की सलाह देते हैं। अहंकार का अर्थ है 'मैं' की भावना। यह 'मैं' ही अधिकांश झगड़ों की जड़ है। इसलिये व्यक्तित्व पर अहंकार करना एकदम निरर्थक है।

- बुद्ध दर्शन का छठा प्रमुख विचार हृदय परिवर्तन के विश्वास से संबंधित है। बुद्ध को इस बात पर अत्यधिक विश्वास था कि हर व्यक्ति के भीतर अच्छा बनने की संभावनाएँ होती हैं, ज़रूरी यह है की उस पर विश्वास किया जाए और उसे समुचित परिस्थितियाँ प्रदान की जाएँ।

बुद्ध दर्शन के नकारात्मक पहलू

- बुद्ध का सबसे कमज़ोर विचार उनका यह विश्वास है कि संपूर्ण जीवन दुखमय है। उन्होंने जो चार आर्य सत्य बताए हैं, उनमें से पहला 'सर्वम दुखम' है अर्थात सबकुछ दुखमय है। इस बिंदु पर बुद्ध एकतरफा झुके हुए नज़र आते हैं जबकि जीवन को न तो सिर्फ दुखमय कहा जा सकता है और न ही सिर्फ सुखमय। सत्य तो यह है कि सुखों की अभिलाषा ही वे प्रेरणाएँ हैं जो व्यक्ति को जीवन के प्रति उत्साहित करती हैं।
- बुद्ध के विचारों में एक अन्य महत्त्वपूर्ण खामी नारियों के अधिकारों के संदर्भ में दिखती है। जैसे महिलाओं को शुरुआत में संघ में प्रवेश नहीं देना। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने अपने शिष्य आनंद से कहा था कि अगर संघ में महिलाओं का प्रवेश न होता तो यह धर्म एक हजार वर्ष तक चलता पर अब यह 500 वर्ष ही चल पाएगा। जबकि वर्तमान में हम देखते हैं कि महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर चलने में सक्षम हैं।

❖ **आदि शंकराचार्य**

- **परिचय**
  आदि शंकराचार्य का जन्म 11 मई, 788 ईस्वी को कोच्चि, केरल के पास कलाडी नामक स्थान पर हुआ था।
- 33 वर्ष की आयु में उन्होंने केदार तीर्थ में समाधि ली।
- वे **शिव के भक्त** थे।
- उन्होंने **अद्वैतवाद के सिद्धांत** को प्रतिपादित किया और संस्कृत में वैदिक सिद्धांत (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र और भगवद गीता) पर कई टिप्पणियाँ लिखीं।
- वे **बौद्ध दार्शनिकों** के विरोधी थे।

- **प्रमुख कार्य**
  - ब्रह्मसूत्रभाष्य (ब्रह्म सूत्र पर टिप्पणी)।
  - भजगोविंदा स्तोत्र।
  - निर्वाण शातकम्।
  - प्राकरण ग्रंथ।
- **अन्य योगदानः**
  - वह भारत में उस समय हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करने के लिये काफी हद तक ज़िम्मेदार थे जब बौद्ध धर्म लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था।
  - सनातन धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने शिंगेरी, पुरी, द्वारका और बद्रीनाथ में भारत के चारों कोनों पर चार मठों की स्थापना की।
- **अद्वैत वेदांतः**
  यह कट्टरपंथी अद्वैतवाद की दार्शनिक स्थिति को व्यक्त करता है, यह संशोधनवादी विश्वदृष्टि प्राचीन उपनिषद ग्रंथों से प्राप्त हुई है।
  - अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनिषद अद्वैत के एक मौलिक सिद्धांत को 'ब्राह्मण' कहते हैं, जो सभी चीजों की वास्तविकता है।
  - अद्वैत ब्रह्म को पारलौकिक व्यक्तित्व और अनुभवजन्य बहुलता के रूप में मानते हैं। अद्वैत वेदांती यह स्थापित करना चाहते हैं कि स्वयं (आत्मा) का आवश्यक मूल ब्रह्म है।
  - अद्वैत वेदांत इस बात पर ज़ोर देता है कि आत्मा शुद्ध अनैच्छिक चेतना अवस्था में होती है।
  - अद्वैत एक क्षणरहित और अनंत अस्तित्ववादी है और संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विशेषताओं के व्यक्ति और विभिन्न प्रकार की क्षमताओं के लोगों से संबंध स्थापित करना पड़ता हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अहम सम्मान दूसरे व्यक्तियों से टकरा जाता है और जिन लोगों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है उनमें अहम नहीं होता वह अपने वरिष्ठ का आदर करते हैं और अधीनस्थ से अपनत्व से मिलते हैं। क्योंकि उनका लक्ष्य उनकी प्राथमिकता होता है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं का भी निवारण करता है क्योंकि वह व्यक्ति समूह में कार्य करने की क्षमता रखता हैं।

- संवेगात्मक बुद्धि का प्रमुख अंग अभिप्रेरणा है जिसके कारण व्यक्ति आपने आप को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अभिप्रेरित करता है और अपने आसपास के व्यक्तियों को भी उस लक्ष्य प्राप्ति में सम्मिलित कर लेता हैं। इन व्यक्तियों में जिम्मेदारी लेने की भावना होती हैं। ऐसे व्यक्ति अपने निर्णय और निर्णय से होने वाले परिणाम की जिम्मेदारी स्वयं पर लेते हैं, उसको दूसरों पर प्रक्षेपण नहीं करते स्वतः ही यह प्रतिभा कुशल प्रशासन करने में सहायता करती हैं।
- संवेगात्मक बुद्धि जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है तथा यह लोकसेवक में झगड़े व दुविधा को निपटाने और झगड़े से दूर रहने की क्षमता विकसित करती हैं।
- संवेगात्मक बुद्धि से सहयोग की भावना, समायोजन की क्षमता, नेतृत्व की भावना, सकारात्मक व्यक्तिगत गुणों का विकास संभव होता हैं।

❖ व्यक्तिगत भिन्नताएँ

शिक्षा के अति प्राचीनकाल से आयु के अनुसार विद्यार्थियों में अन्तर किया जाता है कि आयु की विभिन्नता से बालक को भिन्न-भिन्न स्तर की शिक्षा मिलनी चाहिये। क्रमशः आयु बढ़ने के साथ पाठ्यक्रम को अधिक विस्तृत और कठिन बनाया जा सकता हैं।

प्राचीनकाल में आयु के अतिरिक्त थोड़ा बहुत बुद्धि की विभिन्नता पर भी ध्यान रखा जाता था। साथ ही शैक्षिक सम्प्राप्ति को भी महत्त्वपूर्ण माना जाता था। इस प्रकार प्राचीनकाल में और मध्यकाल में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का तात्पर्य "किसी विषय पर अधिकार करने की योग्यता से समझा जाता था।" आधुनिक स्कूलों में व्यक्तियों की अन्य प्रकार की योग्यताओं और व्यक्तिगत विशेषताओं पर भी ध्यान दिया जाता हैं। व्यक्तिगत विभिन्नताओं की इस परिभाषा से स्पष्ट है कि उसमें मनुष्य व्यक्तिगत के वे सभी पहलू आते हैं, जिनको किसी न किसी प्रकार से मापा जा सकता हैं। इस प्रकार के पहलू अनेक हो सकते हैं; जैसे- परिवर्तनशीलता, सामान्यता, बाल विकास और सीखने की गति में अन्तर व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षणों में परस्पर सम्बन्ध, अनुवांशिकता और परिवेश का प्रभाव इत्यादि ।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में शारीरिक और मानसिक विकास, स्वभाव, सीखने की गति और योग्यता, विशिष्ट योग्यताएँ रुचि तथा व्यक्तित्व आदि में अन्तर देखा जा सकता हैं।

शिक्षण में अनेक प्रकार की समस्याएँ बालकों के व्यक्तिगत भेद उत्पन्न कर देते हैं; जैसे- अध्यापक किस कक्षा में किस प्रणाली से पढ़ाये कि सभी बालक समान रूप से लाभ उठा सके।

वैयक्तिक दृष्टि से वैयक्तिक भेदों का अध्ययन सबसे पहले गाल्टन ने प्रारम्भ किया था तब से इस विषय पर अनेक अनुसन्धान हो चुके हैं, जिनके आधार पर मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा की कई नयी प्रणालियों का विकास किया हैं। यद्यपि अध्यापक के लिये व्यक्तिगत तरीके से कई प्रकार की समस्याओं को उत्पन्न करते हैं। किन्तु समाज की और व्यक्ति की दृष्टि से वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

एक समय था जब व्यक्ति की आवश्यकताएँ सीमित थी, जिनको वह सरलता से पूरा कर लेता था। आधुनिक युग में हमें विभिन्न प्रकार की विशेष योग्यताओं वाले व्यक्तियों को आवश्यकता है जो समाज के विकास में विभिन्न योग दे सकें।

व्यक्तिगत भेद व्यक्ति विशेष के लिये भी महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि उसका उनके विकास में सन्तोष तथा आनन्द मिलता है और वह अपनी योग्यताओं के अनुकूल विकास कर सकता है। व्यक्तिगत भेदों के अध्ययन से बालकों की व्यक्तिगत योग्यताओं का पता लगाकर उनका उचित विकास कर सकते हैं।

वैयक्तिक भिन्नता के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि भिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है।

स्किनर के शब्दों में, "बालक के प्रत्येक सम्भावित विकास का एक विशिष्ट काल होता है। यह विशिष्ट काल प्रत्येक व्यक्ति में वैयक्तिक भिन्नता के अनुसार पृथक्-पृथक् होता है। उचित समय पर इस सम्भावना का विकास न करने से नष्ट हो सकता है।"

<u>व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा :-</u>

व्यक्तिगत विभिन्नता की निम्न परिभाषाएँ हैं-

स्किनर के अनुसार व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा

"मापन किया जाने वाला व्यक्तित्व का प्रत्येक पहलू वैयक्तिक भिन्नता का अंश है।"

टायलर के शब्दों में व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा

"शरीर के आकार और रूप, शारीरिक कार्य गति की क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान, रुचियों, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में मापी जाने वाली भिन्नताओं का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है।"

जेम्स ड्रेवर के अनुसार व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा

"औसत समूह से मानसिक, शारीरिक विशेषताओं के सन्दर्भ में समूह के सदस्य के रूप भिन्नता या अन्तर को वैयक्तिक भेट या व्यक्तिगत विभिनता कहते है । "

<u>व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार</u> :-

बुद्धिहीन प्राणियों की क्रियाओं में बहुत कुछ समानता पायी जाती है क्योंकि उनकी समस्त क्रियाएँ अनुकरण तथा उनकी मूल प्रवृत्तियों से प्रभावित होती हैं परन्तु मनुष्य की समस्त क्रियाओं में जितनी विभिन्नता पायी जाती है, उतनी अन्य प्राणियों में नहीं क्योंकि मानव-व्यवहार केवल मूल प्रवृत्तियों से ही नहीं, अपितु चार अमूर्त तत्त्वों- मन, बुद्धि, चित्त तथा अहंकार से भी प्रभावित होता है।

इस दृष्टि से व्यक्तियों या बालकों में निम्न वैयक्तिक विभिन्नताएँ पायी जाती हैं- (1) शारीरिक, (2) बौद्धिक , (3) सामाजिक, (4) भावात्मक या सांवेगिक, (5) नैतिक, (6) सांस्कृतिक तथा (7) प्रजातीय।

पुनः इन विभिन्नताओं में भी कई उप-विभिन्नताएँ हो सकती हैं, जैसे- शारीरिक विभिन्नताओं में रूप, रंग, आयु, योनि, शक्ति आदि से सम्बन्धित विभिन्नताएँ। साथ ही इन विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले भी कई तत्त्व हो सकते हैं। इन सभी तथ्यों का उल्लेख आगे किया गया है।

I. शारीरिक विभिन्नताएँ

लिंगीय पद को हम अलग न लेकर शारीरिक भेदों के अन्तर्गत ही ले रहे हैं। इस दृष्टि से कोई स्त्री है तो कोई पुरुष । इसी आधार पर बालक-बालिका, स्त्री-पुरुष, वृद्ध-वृद्धा आदि भेद होते हैं। इनमें अर्थात् बालक या बालिकाओं आदि में उनकी आयु, वजन, कद, शारीरिक गठन आदि की दृष्टि से भी भेद होते हैं। यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चे भी समान नहीं होते।

पुनः शारीरिक अंगों की दृष्टि से भी किसी अंग की कमी हो सकती है और किसी में किसी अंग का विशेष उभार इस ष्ट से भी बड़े भेद होते हैं। रंग की दृष्टि से भी कोई काला होता है और कोई गोरा ।

अतः शारीरिक दृष्टि से वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार हैं

(1) आयु, (2) वजन, (3) योनि, (4) कद, (5) रंग । (6) किसी अंग विशेष की कमी या उभार आदि ।

2. बौद्धिक विभिन्नताएँ बौद्धिक दृष्टि से भी सभी व्यक्ति समान नहीं होते। एक ही माता-पिता के

सभी बच्चे और यहाँ तक की जुड़वाँ बच्चे भी बौद्धिक दृष्टि से समान नहीं होते। कोई मन्द बुद्धि होता है तो कोई सामान्य बुद्धि और कोई बौद्धिक दृष्टि से अ
प्रखर ।

3. सामाजिक विभिन्नताएँ सामाजिक दृष्टि से भी बालकों में अनेकों विभिन्नताएँ पायी जाती हैं-

- कुछ व्यक्ति बड़े जल्दी मित्र बना लेते हैं तो कुछ प्रयत्न करने पर भी मित्र नहीं बना पाते क्योंकि उन्हें मित्र बनाने की कला आती ही नहीं।
- कुछ को अधिकतर लोग पसन्द करते हैं और कुछ को कोई नहीं, अर्थात् कुछ बड़े लोकप्रिय होते हैं तो कुछ एकांकी ।
- कुछ सभी के साथ उठना-बैठना पसन्द करते हैं तो कुछ को अकेलापन और एकान्तप्रियता अधिक पसन्द है ।
- कुछ बड़ी विनोदी प्रकृति वाले और सामाजिक होते हैं तो कुछ शर्मीले और अपने ही हाल में मस्त रहने वाले। सामाजिकता की यह भावना छोटे-बड़े, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष तथा धनी निर्धन सभी में अलग-अलग रूपों में पायी जाती है।
- जितना छोटा वर्ग या समूह होगा, उसमें सामाजिकता की भावना उतनी ही अधिक होगी।
- स्वयं को ज्ञान, धन, जाति, वर्ग आदि की दृष्टि से दूसरों की अपेक्षा ऊँचा समझने वाले लोग, सामाजिक कम और विचारों की सात्विकता वश स्वयं को समान या दूसरों की अपेक्षा कम समझने वाले लोग अधिक सामाजिक होते हैं।
- इन दोनों ही कारणों से शहर की अपेक्षा गाँव वालों में सामाजिकता की भावना प्रायः अधिक पायी जाती है।
- अहम एवं सामाजिकता की भावना का विरोधी सम्बन्ध है, अर्थात् जहाँ 'अहं' होगा वहाँ 'सामाजिकता की भावना' कम और जहाँ 'अहं' नहीं होगा, वहाँ 'सामाजिकता की भावना अधिक पायी जायेगी।
- इन दृष्टियों से सभी बालक और व्यक्तियों में भी भिन्नता पायी जाती है। भारतीय मनोवैज्ञानिक के अनुसार संवेगों की संख्या 10 और मनोवैज्ञानिक मैक्डूगल के अनुसार यह संख्या 14 है। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति में किसी संवेग का उभार अधिक और किसी का कम होता है। किसी को क्रोध अधिक आता है तो किसी को दया। कोई अति भीरू है तो कोई बहुत साहसी ।

५. नैतिक विभिन्नताएँ

कता का मूल आधार अच्छाई और बुराई है। परन्तु अच्छाई और बुराई दोनों ही परिस्थिति सापेक्ष्य शब्द हैं । जो बात किसी भी व्यक्ति या बालक को अच्छी लगती है, वही बात दूसरे व्यक्ति को बुरी भी लग सकती है। नैतिकता की मोटी पहचान यही हो सकती है कि जो कार्य हम दूसरों के हित की परवाह न करके अपने स्वार्थ-सिद्धि के लिये करते हैं, सामान्यतया वही अनैतिकता है, जबकि जो कार्य परहित की दृष्टि से किये जाते हैं, वे नैतिकता में आते हैं।भी आज से नहीं, अपितु आदिकाल से चले आ रहे हैं। रावण और विभीषण दोनों भाई होते हुए भी एक राम द्रोही था तो दूसरा राम भक्त । अग्रसेन और कंस में देखिये, पिता कृष्ण-भक्त था तो बेटा कृष्ण-द्रोही। ये भेद आज भी समाज में पाये जाते हैं। इस दृष्टि से भाई-भाई, बाप- - बेटे, भाई-बहन, स्त्री-पुरुष आदि सभी में असमानताएँ हो सकती हैं।

ऽ. सांस्कृतिक विभिन्नताएँ

प्रत्येक देश की एक विशेष संस्कृति होती है। जो व्यक्ति जिस देश में पला है, वहाँ की संस्कृति का उस पर प्रभाव पड़ता ही है। कुछ देशों में लोग प्रेम विवाह को सर्वोत्तम बन्धन मान सकते हैं, जबकि हमारी भारतीय
संस्कृति में पले हुए लोग इसे निकृष्टतम बन्धन मानते हैं। भारतीय संस्कृति में पले हुए लोग माता-पिता और बच्चों के प्रति अपने कर्त्तव्य के लिये जितने सजग हैं, उतने अन्य संस्कृति वाले सभी लोग नहीं। यह हमारी संस्कृति का प्रभाव है। इस दृष्टि से भी व्यक्तियों की मान्यताओं एवं मूल्यों में अन्तर होता है।

6. प्रजातीय विभिन्नताएँ

प्रजाति से हमारा तात्पर्य यहाँ वर्णगत- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्रों से नहीं, अपितु उन प्रजातियों से हैं जो आदिकाल में थी और उनकी सन्ताने अभी तक चली आ रही हैं, उदाहरणार्थ- आर्यों की सन्तानें, हूण और शकों की सन्तानों आदि से भिन्न है। आज भी अफ्रीका के हब्शी अति काले होते हैं और शीत प्रधान देशों के लोग अति गोरे ।

अधिक पड़ता है। भाषा आदि सभी पर्यावरण से ही सीखी जाती है। इसी प्रकार रीति-नीतियों आदि का सम्बन्ध भी वातावरण से ही अधिक है। गुजरात में पैदा होने वाले बच्चे गुजराती सीख जाते हैं। तो मेवाड़ में रहने वाले मेवाड़ी। क्यों ? क्योंकि वहाँ प्रायः वही भाषाएँ बोली जाती हैं।

इसी प्रकार यदि आप नैतिक दृष्टि से लें तो भी किसी क्षेत्र तथा सम्प्रदाय विशेष में जो बात अच्छी समझी जाती है, वही बात दूसरे क्षेत्र तथा सम्प्रदाय में बुरी भी समझी जा सकती है। कहीं पर एक से अधिक शादियाँ करना अच्छा समझा जाता है कहीं पर बुरा। इन सभी मान्यताओं पर वातावरणीय प्रभाव है।

रूप-रंग, बुद्धि आदि पर वंशानुक्रमण का प्रभाव अधिक होता है परन्तु इसका यह आशय कदापि नहीं कि उन पर वातावरण का प्रभाव पड़ता ही नहीं है। वातावरण के प्रभाव से भी उनमें थोड़ा बहुत परिवर्तन सम्भव है। यदि किसी बच्चे को प्रारम्भ से ही ऐसे वातावरण में रखा जाय जहाँ वह बौद्धिक दृष्टि से किसी बात पर विचार करे तो उसकी बुद्धि में थोड़ा बहुत परिवर्तन अवश्य आता है।

इसी प्रकार ठण्डी जलवायु में रंग कुछ गोरा और गर्म जलवायु में काला हो जाता है। यहाँ यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि वातावरण के प्रभाव से रूप, रंग, बुद्धि, शारीरिक गठन आदि में थोड़ा ही परिवर्तन सम्भव है, बहुत अधिक नहीं।

काले को गोरा और गोरे को काला या बुद्ध को बुद्धिमान और बुद्धिमान को नितान्त बुद्ध केवल वातावरण के प्रभाव से नहीं बनाया जा सकता। संक्षेप में वंशानुक्रमण और वातावरण के प्रभाव से जो वैयक्तिक भेद होते हैं, उस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है किबालक में जन्म के समय से जो भी बातें पायी जाती हैं, उन पर वंशानुक्रमण का प्रभाव अधिक होता है, जबकि जिन्हें वह बाद में सीखता है, वे वातावरण के प्रभाव से अधिक सीखी जाती हैं।

पिछड़े हुए क्षेत्रों में रहने वाली पिछड़ी जातियाँ अभी भी ईश्वर से डरती हैं, चोरी करना पाप समझती हैं, जबकि बड़े- बड़े शहरों में रहने वाले लोगों में से बहुत से इसे बिल्कुल बुरा नहीं समझते। यह सभी वातावरण का ही प्रभाव है।

लोक प्रशासन (इकाई – 3)

अध्याय -3

मानवीय आवश्यकताएं एवं अभिप्रेरणा

मनुष्य एक लालची प्राणी है जिसके अंदर सदैव अधिकाधिक मात्रा में अच्छी से अच्छी वस्तुएं प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है।

और मनुष्य वर्तमान में मौजूद वस्तुओं, से और अधिक एवं अच्छी वस्तुएं प्राप्त करने की जो चाहत रखता है उसे इच्छा कहते हैं।

जैसे-: अच्छा घर प्राप्त करने की इच्छा, कार प्राप्त करने की इच्छा।

और ऐसी इच्छाएं जिन्हें व्यक्ति अपने जीवन की जरूरत मानने लगता है।

तथा उसकी पूर्ति के लिए उस व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होता है ,और वह अपना धन व्यय करके उस वस्तु को खरीदने के लिए तैयार हो जाता है। उन्हें उस व्यक्ति की आवश्यकता कहते हैं।

उदाहरण के लिए-: एक गरीब व्यक्ति की आवश्यकता कपड़ा, मकान तथा भोजन प्राप्त करना, नींद लेना ही आवश्यकता है, जबकि एक अमीर व्यक्ति की आवश्यकता अच्छा आलीशान मकान लेना, कार लेना हो जाती है। क्योंकि अमीर व्यक्ति के पास कार लेने के लिए पर्याप्त धन भी है और वह धन खर्च करने के लिए तत्पर भी होता है।

मानवीय आवश्यकता की विशेषताएं-:

आवश्यकताएं असीमित होती हैं:-

मानव जीवन एक लालची जीवन है अतः मानव आवश्यकता है कि असीमित होती है एक आवश्यकता पूरी होने पर ,अन्य नई आवश्यकता है जन्म ले लेती है, जैसे यदि किसी गरीब व्यक्ति को पंखा प्राप्त हो जाता है तो वह कूलर प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं लगता है जब उसे कूलर प्राप्त हो जाता है तो वह एयर कंडीशनर की लालच रखता है। बाद में एयर कंडीशन उसकी आवश्यकता बन जाती है।

किसी एक आवश्यकता की तुष्टि कुछ समय के लिए संभव है।

किसी एक आवश्यकता की पूर्ति कुछ समय के लिए पर्याप्त होती किंतु बाद में पुनः उस आवश्यकता का अनुभव होता है।

जैसेः- एक बार प्यास लगने पर हम दो-तीन गिलास पानी पी लेते हैं तो हमें पानी की आवश्यकता कुछ समय के लिए समाप्त हो जाती है किंतु पुनः प्यास लगने पर पुनः पानी की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार जब हम कोई वस्तु जैसे लेपटॉप खरीद लेते हैं तो कुछ समय के लिए तो लैपटॉप की आवश्यकता समाप्त हो जाती है किंतु जब लैपटॉप का नया मॉडल आता है यह हमारे लैपटॉप खराब हो चुका होता है तो पुनः नया लैपटॉप खरीदने की आवश्यकता होती है।

आवश्यकता समय ,स्थान एवं रूचि के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

हमें विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता भिन्न-भिन्न में समय भिन्न भिन्न स्थानों और रूचि के अनुसार होती है जैसेः- गर्मी के समय हमें पंखा ,कूलर जैसी वस्तुओं की आवश्यकता होती है जबकि ठंडी के समय ऊनी वस्त्रों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार स्थान बदलने पर भी आवश्यकता बदल जाती है जैसे शिमला हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र में स्वेटर की जरूरत होती है जबकि उसी समय में मध्यप्रदेश जैसे क्षेत्रों में स्वेटर की जरूरत नहीं होती।

फैशन या रुचि के बदलने पर भी आवश्यकता बदल जाती है जैसे पहले के लोगों को शर्ट, पैंट, कोट तथा मोबाइल की जरूरत नहीं होती थी किंतु अब के लोगों को इसकी आवश्यकता होती।

मानवीय आवश्यकताओं का वर्गीकरण या पिरामिड :-

अब्राहम मैस्लो नामक मनोवैज्ञानिक ने मानवीय आवश्यकताओं का एक सोपान प्रस्तुत किया है, जिसे मैस्लो का पिरामिड भी कहते हैं

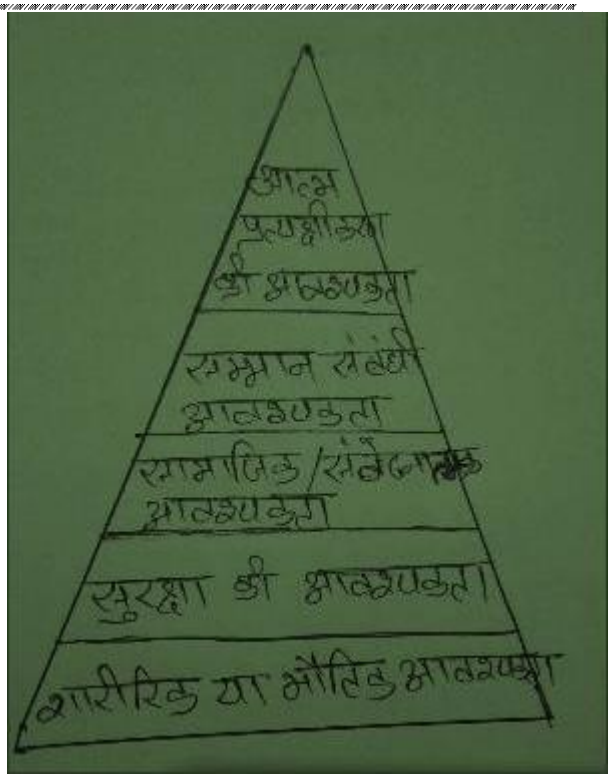

शारीरिक या भौतिक आवश्यकताएंः-

भी आवश्यकता है जो मनुष्य के जीवन के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है जैसेः- भोजन, पानी, आवास, निद्रा, यौन-सुख आदि।

सुरक्षा संबंधी आवश्यकताः-

भौतिक सुरक्षाः- जैसे किसी बीमारी से सुरक्षा, दुर्घटना से सुरक्षा, आक्रमण से सुरक्षा से सुरक्षा।

आर्थिक सुरक्षाः- आय की सुरक्षा, अर्जित संपत्ति की सुरक्षा, वृद्धावस्था के लिए धन की सुरक्षा।

सामाजिक आवश्यकताएं :-

सुख दुख जैसी संवेदनाओं को बांटने के लिए परिवार, मित्र ,पत्नी की आवश्यकता।

सम्मान की आवश्यकता :-

प्रत्येक व्यक्ति सम्मान प्राप्त करने की इच्छा रखता है, इसके लिए वह अच्छे कर्म करता है तथा अच्छी पोस्ट प्राप्त करता है।

आत्म प्रत्यक्षीकरण की आवश्यकताः-

जब व्यक्ति की उपरोक्त सभी आवश्यकता है पूर्ण हो जाती हैं तो उसे मानसिक संतुष्टि एवं अध्यात्म की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम व्यक्ति अपनी शारीरिक या भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है उसके बाद जैसे-

स्पष्ट है यह आवश्यकता लोक कार्मिकों में निष्ठां, प्रतिभा, कर्मनिष्ठा, सामर्थ्य, कार्य के प्रति समर्पण भावना, आदि की मांग करती है जिन्हें लोक प्रशासन में सदाचार एवं नैतिक मूल्यों के रूप में देखा जा सकता है।

लोक प्रशासन में मूल्य :-

वर्तमान में लोक प्रशासन की भूमिका अत्यधिक व्यापक एवं जटिल हो गई है नीति निर्माण की प्रक्रिया और विभिन्न समस्याओं को सुलझाने में प्रशासक स्थाई रूप से भाग लेने लगे हैं। अतः यह आवश्यक है कि सभी प्रशासक निर्णय प्रक्रिया से बेहतर ढंग से परिचित हों। साथ ही उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि समस्या समाधान में मूल्यों एवं तथ्यों की भूमिका क्या हो सकती है ? ये लोक सेवाएं वैध सत्ता पर आधारित हैं जिन्हें कार्यों के संपादन हेतु समुचित अधिकार, आवश्यक सुरक्षा तथा पर्याप्त सुविधा प्रदान की गई है। अतः इन सेवाओं में कार्यरत लोक सेवकों के उत्तरदायित्व तथा जवाबदेहिता सुनिश्चित होने चाहिए। सरकार के द्वारा आज नए- नए कार्यों को अपनाया जा रहा है जिस कारण यह बेहद अनिवार्य हो जाता है कि इन लोक सेवकों पर लगातार निगरानी रखी जाए।

लोक सेवकों को उनके कार्यों एवं व्यावसायिक संहिता सम्बन्धी दिशा –निर्देशन लोक सेवा मूल्यों के संतुलित ढांचे द्वारा दिया जाना चाहिए।

लोक सेवा मूल्य

1. लोकतान्त्रिक मूल्य
2. व्यवसायिक मूल्य
3. नैतिक मूल्य
4. सार्वजनिक मूल्य

लोकतान्त्रिक मूल्य -

- लोक सेवकों द्वारा मंत्रियों को निष्पक्ष एवं ईमानदारीपूर्वक परामर्श देना।
- लोक सेवकों द्वारा मंत्रिमंडलीय निर्णय का ईमानदारीपूर्वक लागू करवाना।
- लोक सेवकों द्वारा वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों प्रकार के मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्वों का समर्थन करना।

व्यावसायिक मूल्य -

- लोक सेवकों द्वारा अपने कार्यों का निष्पादन कानून के दायरे में ही करना।
- राजनीति से तटस्थ बने रहें।
- सार्वजनिक धन का सही, प्रभावी व दक्षतापूर्ण प्रयोग सुनिश्चित करें।
- सरकार में पारदर्शिता के मूल्यों का समावेश करें तथा उचित प्रयास करें।
- **नैतिक मूल्य -**
- लोक सेवकों को अपने सभी कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए।
- लोक सेवक अपने सभी कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाएं।
- लोक सेवकों द्वारा लिया जाने वाला प्रत्येक निर्णय सार्वजनिक हित में हो।
- **सार्वजनिक मूल्य -**
- लोक सेवा में नियुक्ति सम्बन्धी निर्णय योग्यता के आधार पर लिए जाने चाहिए।
- लोक सेवा संगठनों में सहभागिता, पारदर्शिता एवं संचार व्याप्त होना चाहिए।

<u>लोक प्रशासन में नैतिकता</u>

सामान्यतः नीतिशास्त्र का तात्पर्य उन नैतिक मूल्यों से है जो लोगों के व्यवहार को निर्देशित एवं संस्कृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब इन नैतिक मूल्यों की प्रशासन के सन्दर्भ में परिचर्चा की जाती है तो यह "प्रशासनिक नीतिशास्त्र" कहलाता है। आधुनिक लोक सेवाएं एक पेशे का रूप धारण कर चुकी है, अतः प्रशासनिक नीतिशास्त्र की मांग उठने लगी है। जर्मनी वह प्रथम देश था जहाँ लोक सेवाओं का पेशेवर रूप विकसित हुआ और इसी सन्दर्भ में जर्मनी में लोक सेवकों के लिए पेशेवर आचार संहिता विकसित हुई। वहीं अमेरिकन लोक प्रशासन में नैतिकता के प्रारम्भ को वहां प्रचलित "लूट पद्धति" (Spoil System) के सन्दर्भ में जोड़ा जा सकता है, जब इस पद्धति से तंग आकर एक अमेरिकन युवक ने वर्ष 1881 में तत्कालीन अमेरिकन राष्ट्रपति गारफील्ड की हत्या कर दी।

प्रशासन में नैतिक तत्वों का दार्शनिक आधार

प्रत्येक देश कुछ निश्चित मूल्यों एवं नैतिक तत्वों द्वारा मार्गदर्शित होता है , जैसे - सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, न्याय, सहिष्णुता, समतावाद, आदि

और प्रशासन या शासन से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सार्थक विकास की प्राप्ति हेतु इन तत्वों को आत्मसात करे ।

शासन शब्द यूनानी क्रिया ' Kubernan ' से उत्पन्न है जिसका सामान्य अर्थ है - 'रस्ते पर लाना या चीज़ों को नियंत्रित करना' इसका प्रथम प्रयोग 'प्लेटो' द्वारा उपमा के तौर पर किया गया था । **प्लेटो** के अनुसार सिर्फ आदर्श शासन (राज्य) में ही मनुष्य खुशहाल और संतुष्ट रह सकता था। इनके अनुसार कल्याणकारी राज्यों के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने अधिक से अधिक नागरिकों की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करे। प्लेटो ने इसके लिए राज्य के लिए साहस, ज्ञान, सहिष्णुता और न्याय जैसे सद्गुणों की अनिवार्यताएं बताई है ।

वहीँ '**अरस्तु**' ने शासन को ऐसे राज्य के सन्दर्भ में वर्णित किया है जो नीतिशास्त्रीय और न्यायी गवर्नर द्वारा शासित होता है। उनके अनुसार राज्य मनुष्य के सर्वोत्तम अच्छाइयों एवं नैतिक कर्तव्यों का निर्वाहन करता था ।अरस्तु मानते थे की परिवार और गांव का अस्तित्व जीवन की सुरक्षा तथा सहयोग के लिए था , किन्तु शासन के रूप में राज्य का अस्तित्व सिर्फ जीवन के लिए न होकर सुखमय जिंदगी के लिए था ।

स्पष्ट है यूनानियों के लिए शासन या राज्य मात्र राजनीतिक या प्रादेशिक इकाई न होकर विशिष्ट उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति की एक नैतिक इकाई थी।

कन्फ्यूशसवादी दर्शन -

महान चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने परिवार, समाज एवं शासन में सदाचार एवं नैतिकता पर अधिक बल दिया है। उन्होंने राज्य के कार्यकलापों में नैतिकता के महत्व को प्रतिपादित किया और शांति, मानवता जैसे मूल्यों को साम्राज्य पर शासन करने की विचारधारा के रूप में शामिल किया। उनके अनुसार एक शासक को बल प्रयोग या हिंसा का सहारा लिए बिना खुद के द्वारा प्रस्तुत उदाहरण की शक्ति से शासन करने में सक्षम होना चाहिए ।

भारतीय दार्शनिक अवधारणा के रूप में शासन या प्रशासन

भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार राजा को निश्चित रूप से सद्गुणों को प्रोत्साहित करना चाहिए और नैतिकता व नैतिक जीवन का मार्ग दिखाना चाहिए ।

अर्थशास्त्र में चाणक्य ने शासन की अवधारणा बताते हुए कहा है कि -

"प्रजा सुखे सुखं राज्ञः , प्रजानां च हिते हितम् ।
न आत्मं प्रियं हितम् राज्ञ; प्रजानां तु प्रियं हितम् ॥

अर्थात प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के हित में ही राजा को अपना हित समझना चाहिए आत्मप्रियता में राजा का हित नहीं है , बल्कि प्रजा कि प्रियता में ही राजा का हित है ।

कौटिल्य या चाणक्य के अनुसार शासन के अंतर्गत राजा का एकमात्र उद्देश्य सिर्फ जनता के हित एवं सुख के लिए कार्य करना था ।

वह कहता है - " सहाय साध्वं राजत्वं चद्रमेकं न वर्तते ।
कुर्वीत सचिवांत स्मन्तेषाम् च श्रीणायन्तं ॥ "

अर्थात राजत्व सबकी सहायता से ही सम्भव है जिसके तहत -

किसी कलंकित व्यक्ति को पुनः शासन या सत्ता में सहभागी न बनायें ।

उचित का सब समर्थन करते हैं , जबकि अनुचित की सभी जगह निंदा होती है, अतः पक्षपात रहित शासन ही कीर्ति प्रदान करने वाला शासन है ।

शासन की मंत्रणा को गुप्त रखना चाहिए, अन्यथा सिद्धि में बाधा होगी ।

बौद्ध दर्शन -

इसके अनुसार राज्य का मुख्य उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था की रक्षा करना है जिसे बेहतर ढंग से नैतिकता के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। यंहा राजा भी नीति सिद्धांतों से उसी प्रकार जुड़ा है जैसे उसकी प्रजा । उसे न्यायनिष्ठ सिद्धांतों का पालन करना है जिसका सामान्य अर्थ है - उचित दृष्टिकोण, उचित अभिप्राय, उचित वाणी, उचित कर्म, उचित प्रवृत्ति, उचित प्रयास, आदि

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कानून का पालन करना अनिवार्य है एवं उल्लंघन दंडनीय बनाया जाता है |

- कानून को वरीयता देने के पीछे तर्क यह है की कानून जहाँ प्रक्रियागत समानता स्थापित करता है , वहीँ नैतिक तर्क में देशकाल सापेक्ष परिवर्तन हो सकता है |
- यदि केवल नैतिक तर्क को वरीयता दी जाएगी तो हर बार नए निर्णय समाज के हित में नहीं हैं |

नैतिक दुविधा –

- सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक दुविधाओं को एक कुशल और प्रभावी प्रशासन के मार्ग में एक बड़ा अवरोध समझा जाता है | सामान्यत: दुविधा उस स्थिति को कहते हैं जब किसी व्यक्ति के पास दो या अधिक विकल्प हो , वे विकल्प एक दुसरे से पूर्णत: अलग हो अर्थात उन्हें साथ – साथ न चुना जा सकता हो परन्तु किसी एक विकल्प को चुनना अनिवार्य हो अर्थात् निर्णय को टाला न जा सकता हो और सारे विकल्प ऐसे हो कि किसी को भी चुनकर पूर्ण संतुष्टि मिलना संभव न हो |

  इस प्रकार नैतिक संशय या दुविधा के मूल घटक निम्नवत हैं –

- एकाधिकार विकल्पों का होना |
- निश्चितता व स्थिर मस्तिष्क से किसी एक विकल्प को चुनने में असमर्थता |
- विकल्पों में से किसी एक को वरीयता देने में असमर्थता |
- विकल्पों में उचित , अनुचित , सकारात्मक , नकारात्मक मान्यताओं में भेद कर पाने में असमर्थता|

नैतिक दुविधाओं के भेद – सभी दुविधाएँ नैतिक दुविधाएँ नहीं होती | नैतिक दुविधा में विकल्पों में कम – से – कम एक पक्ष नैतिकता से सम्बन्धित होता है और ऐसा भी हो सकता है कि दोनों विकल्प अलग – अलग नैतिक मूल्यों पर आधारित हो | इस आधार पर नैतिक दुविधा के दो भेद किये जा सकते हैं |

व्यक्तिगत लाभ बनाम नैतिक विकल्प – ऐसे विकल्पों में नैतिक दुविधा यह होती है कि व्यक्ति अपने लिए फायदेमंद विकल्पों को चुने या उस विकल्प को जो उसके लिए फायदेमंद न होकर नैतिक भी है |

उदाहरण के लिए एक प्रशासक को सड़क परियोजना में हिस्सा लेना है दो विकल्पों में से एक वह है जो उसके माता पिता के घर के नजदीक गुजरता है जहाँ निर्माण कार्य से अधिक व्यक्तिगत लाभान्वित होंगे | यहाँ व्यक्तिगत लाभ व सामाजिक हित e से किसी एक को चुनने का नैतिक विकल्प है |

विभिन्न नैतिक मूल्यों में दुविधा –

- विभिन्न नैतिक मूल्यों में दुविधा को निम्नाकित तीन उदाहरणों से समझा जा सकता है –
- अधिकारी के आदेश को महत्व दे या जनता के फायदे को |
- कानून में ऐसी कोई बात है जो कर्मचारी विशेष के धार्मिक मूल्य से मेल न खाती हो |अब वह धार्मिक मूल्य को चुने या कानून को |
- एक अधीनस्थ कर्मचारी जो कि बेहद गरीब है किसी से रिश्वत मांगते पकड़ा गया है | अब अब शिकायत आप के पास आई है | अगर कार्यवाई करेंगे तो उसकी नौकरी छूटेगी तथा उसके बच्चों की शिक्षा दाँव पर लग जाएगी | अगर कार्यवाही नहीं करेंगे तो भ्रष्टाचार के बढ़ने की संभावना बनेगी | दो नैतिक मूल्यों करुणा और कर्तव्यनिष्ठा के बीच इस दुविधा में आप किसे चुनेंगे |

सामान्य नैतिक दुविधाएँ –

- शासकीय सेवकों के लिए रिश्वत लूँ या ना लूँ |
- कार्यालय की किसी सम्पत्ति का व्यक्तिगत हित में प्रयोग करूं या नहीं |
- अगर कार्यालय में कोई अन्य व्यक्ति भ्रष्टाचार कर रहा है तो आगे बढ़कर उसकी शिकायत करूं या नहीं |
- अगर अपने व्यक्तिगत काम के लिए कार्यालय से बाहर जाना पड़े तो उतने समय की औपचारिक छुट्टी लूँ या नहीं |
- अगर कोई कर्मचारी भ्रष्ट है जिसे मैं निलंबित कर सकता हूँ हालाँकि मेरे पास कोई औपचारिक शिकायत नहीं आई है | मैंने खुद उसे रिश्वत लेते हुए देखा है | और मैं जानता हूँ कि वह गरीब है और जटिल पारिवारिक जिम्मेदारियाँ से घिरा है

मानव संसाधन में रोजगार के विभिन्न क्षेत्र –

1. **प्राथमिक क्षेत्र** – कृषि क्षेत्र
- कृषि संसाधन में मानव उपलब्धता ज्यादा है।
- खेती में अवसर कम , GDP का 15% के साथ मजदूरों की अकुशलता के कारण उत्पादकता भी कम हो जाती है।

2. **द्वितीयक क्षेत्र – औद्योगिक क्षेत्र**
इसमें कुशल श्रम की जरूरत होती है। चूकि भारत में कुशल श्रम कम है तो रोजगार भी कम, उपलब्धता भी कम , नियोजिता व उत्पादकता भी कम हो जाते हैं।

3. **तृतीयक क्षेत्र – सेवा क्षेत्र**
- इस क्षेत्र में पूर्ण कुशल मानव की जरूरत होती है।
- यहाँ रोजगार की संभावना ज्यादा
- प्रतिइकाई श्रम पर लाभ बहुत ज्यादा
- इनपुट कम व आउटपुट ज्यादा होता है।

मानव संसाधन उत्पादकता में रोजगार के चलन –

1. **शिक्षा** – रोजगार की दृष्टि से सदाबहार , हर साल Recruitment पब्लिक प्राइवेट patnrship को बढ़ावा , Elcarning , Digiduniya आने वाले समय में केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा भर्तियाँ ली जाएगी।
2. **आईटी** – सूचना प्रोद्योगिकी , कम्प्यूटर , रक्षा , अनुसंधान , अंतरिक्ष , डिजाइन वेब डवलपर , कम्प्यूटर प्रोग्रामर कंसल्टेट। जैसे – इफोसिस ,TCS , W9PRO आदि।
3. **हेल्थकेयर** – औसत आयु में वृद्धि , स्वास्थ्य सेवा जरूरतों में वृद्धि , प्रशासनिक व सपोर्ट स्टाफ की जरूरत होगी।
इसके तहत व्यापक संभावनाएँ ये है कि 25 लाख नई नौकरियों का सृजन किया जाएगा। ये 25 लाख नौकरियों मेडिकल , टूरिज्म , टेली मेडिसीन आदि क्षेत्र में सृजित की जाएगी।
4. **रिटेल** – पाँच सालों में 60 – 80 लाख नौकरियों का सृजन होगा।
5. **ओटोमोबाइल** – रोजगार घटा है , GST नोटबंदी, उत्पादकता , प्रभावित IT। व्यापक संभावनाएँ है जिसके तहत रोजगार वृद्धि की उम्मीदे लगाई जा रही है। इसमें सरकार की अहम भूमिका रहेगी।

मानव संसाधन विकास और शिक्षा

मानव संसाधन के विकास की ओर सर्वप्रथम औद्योगिकी संस्थानों में ध्यान दिया गया। पश्चिमी देशों में आरम्भ हुई औद्योगिक क्रांति के पश्चात श्रमिकों को कल कारखानों में मशीन की तरह उपयोग में लाने की प्रवृति सभी देशों में विद्यमान थी।

कच्चे माल को वास्तविक उत्पादन के रूप में प्रस्तुत करने हेतु मशीन तथा मनुष्य दोनों महत्वपूर्ण संसाधन माने जाते थे।

मानव संसाधन विकास की अवधारणा कार्मिकों के विकास को सर्वांगीण दृष्टिकोणों से समझने का प्रयास करती है। इस अवधारणा को किसी संगठन में क्रियान्वित करने से पूर्व एक सुस्पष्ट तथा सुसंगठित मानव संसाधन विकास विभाग या इकाई की स्थापना की जाती है जो मानव संसाधन से सम्बन्धित सभी कार्य कुशलतापूर्वक पूर्ण कर सके।

इस प्रकार मानव संसाधन विकास वह प्रक्रिया है। जिसमें किसी संगठन के कर्मचारियों की एक नियोजित ढंग से इस प्रकार से सहायता की जाती है कि वे नवीन कार्य आवश्यकताओं एवं उच्चतर दायित्वों के प्रति कौशल प्राप्ति तथा एक संगठनात्मक संस्कृति को विकसित करने में रुचि ले सके जिससे की संगठन के लक्ष्य तथा कार्मिकों की संतुष्टि का स्तर ऊँचा हो जाये।

<u>मानव संसाधन विकास में शिक्षा –</u>

"ज्ञान ज्ञान के लिए है" या "शिक्षा शिक्षा के लिए है" का नारा सर्वमान्य सिद्धांत बना हुआ था। बालक के चारित्रिक , मानसिक एवं अध्यात्मिक विकास के लिए शिक्षा देने की परम्परा शिक्षा को अनउत्पादक क्रिया माना जाने लगा था जब शिक्षा का प्रसार हुआ, नामांकन संख्या बढ़ने लगी, व्यय वृद्धि होने लगी और राज्य को शिक्षा पर अधिक धन खर्च करना पडा तो शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान शिक्षा के आर्थिक पक्ष की ओर गया।

"कार्लमार्क्स ने श्रमिकों के तकनीकी कौशल को बढ़ाने पर बल दिया था। मार्शल में शिक्षा को

व्यवसाय पक्ष पर बल दिया था और शिक्षा को आर्थिक विकास से जोड़ने का समर्थन किया था।

1. <u>व्यस्क शिक्षा (प्रौढ़ शिक्षा)</u> –

- व्यस्क शिक्षा की आर्थिक विकास के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है हमारे देश में 63% व्यक्ति निरक्षर है। भारत का विकास इन्हीं निरक्षर व्यक्तियों पर निर्भर करता है।
- इसलिए साक्षरता एवं समाज शिक्षा सघन प्रयत्नों द्वारा उन्हें इस योग्य बनाना होगा कि वे कृषि तथा उद्योग धंधो से सम्बन्धित साहित्य को समझ सकें और उसके आधार पर कृषि तथा व्यवसाय में प्रगति कर सके।
- शिक्षा से तकनीकी ज्ञान , विवेक एवं साहस में वृद्धि होती है जिससे आर्थिक क्रियाओं का विस्तार होता है , साधनों का सही से उपभोग संभव बनता है तथा उत्पादक बढ़ता है जिससे आर्थिक प्रगति होती है।

2. <u>प्राथमिक शिक्षा</u> –

- प्राथमिक शिक्षा से ही शिक्षा का आधार तैयार होता है।
- इससे साक्षरता आती है , प्रारम्भिक कुशलता मिलती है और उचित मनोवृत्ति निर्मित होती है।
- अपने आस – पास के पर्यावरण की जानकारी प्राप्त कर लेने से वे अन्धविश्वास और अविवेक के चक्कर में नहीं फसते जिससे उनके विकासात्मक प्रयासों में अवरोध नहीं आ पाता है।
- इससे नई तकनीकी पद्धतियों , कार्य अनुभव और यंत्रों के प्रयोग के प्रति उनमें वैज्ञानिक दृष्टि उत्पन्न होता है। जो उनका आधुनिक युग की उत्पादन क्रियाओं से समायोजन करने में सहायक होता है।
- इस शिक्षा काल में उनकी मनोवृत्ति याँ भी परिष्कृत होती है।
- उनमे सहानुभूति , भ्रातृत्व , सहिष्णुता , मानवता , सहकारिता का उपयोगी आदि की भावना उत्पन्न करते हैं जो उन्हें राष्ट्र समाज तथा कार्यशाला का उपयोगी सदस्य बनाने में सहायक होती है।

3. <u>माध्यमिक शिक्षा</u> –

- माध्यमिक शिक्षा अधिकांश छात्रों के लिए अंतिम शिक्षा स्तर होता है जिसके बाद वे आर्थिक क्रिया में संलग्न हो जाते हैं। यह क्रिया या तो उनका स्वयं का कोई रोजगार धंधा हो या मध्यम वर्ग के कर्मचारी की हैसियत से किसी कार्यालय या कारखाना में कार्य करें।
- वे खेती, दस्तकारी, व शिल्पकर्म करते है अथवा लिपिक, यांत्रिक या श्रमिक के रूप में नौकरी करते हैं।
- वे चाहे सीधे उत्पादन के कारखानों में काम करें अथवा प्रशासन संगठन आदि कार्यालय में रहे आर्थिक विकास में सहायक होते हैं।
- माध्यमिक शिक्षा सबसे अधिक संख्या में निपुण अथवा अर्द्धनिपुणों का निर्माण करती है।
- माध्यमिक शिक्षा उतीर्ण कर छात्र उच्च शिक्षा में प्रवेश करते है। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की विकास में तथा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है।

4. <u>उच्च शिक्षा</u> -

- उच्च शिक्षा, उच्च वर्ग के कर्चारियों का निर्माण करती है।
- ये बड़े – बड़े कारखाने चलाते हैं। इनके विवेकपूर्ण निर्णय एवं संचालन पर ही उत्पादन प्रगति निर्भर है।
- उच्च शिक्षा दो प्रकार की होती है – 1. सामान्य शिक्षा 2. विशिष्ट शिक्षा
- सामान्य शिक्षा से प्रशासन एवं संगठन के लिए लोग प्राप्त होते है जबकि विशेष शिक्षा से यांत्रिकी एवं कर्मचारी प्राप्त होते हैं।
- आर्थिक विकास के लिए प्राय विशिष्ट प्रकार के शिक्षण पर बल दिया जाता है किंतु विशेष शिक्षण के कारण व्यक्ति का दृष्टि कोण संकुचित हो जाता है।
- विज्ञान और तकनीकी प्रगति के कारण प्रविधियों में शीघ्रता से परिवर्तन होता है।
- इसलिए व्यक्तियों की आवश्यकता बढती जाती है जो परिवर्तित परिस्थितियों से शीघ्र समायोजन कर लेती है।

व्यवसायिक शिक्षा –

- व्यवसायिक शिक्षा का अर्थ मानव कार्य की शिक्षा से भी हो सकता है अर्थात् इसमें मनुष्य मस्तिष्क के बजाए हाथों से अधिक काम करता है जैसे – चमड़े का कार्य, लकड़ी का कार्य धातु कार्य आदि।

❖ जनसंख्या एवं संबंधित मुद्दे

किसी भी देश के सामाजिक,आर्थिक विकास हेतु जनसंख्या महत्वपूर्ण होती है। यह संभावना है कि आगामी कुछ दशकों में भारत चीन को पीछे कर विश्व की जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा देश बन जाएगा। प्रारंभ में जनसंख्या वृद्धि का नारा नकारात्मक माना जाता था किंतु 19वीं शताब्दी के पश्चात एक नवीन परिप्रेक्ष का आगमन हुआ। औद्योगिक क्रांति, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद आदि के कारण उत्पादन प्रक्रिया को अत्यधिक बल मिला। इसी क्रम में जनसंख्या बुनियादी घटक के रूप में स्थापित हुआ। 20 वीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में अमेरिका, जापान जैसे देशों ने अपनी अपेक्षाकृत अधिक जनसंख्या के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभुता हासिल की।

- यदि किसी देश में आर्थिक संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक हो या शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार की कमी होने पर जनसंख्या वृद्धि एक नकारात्मक रूप में एवं आर्थिक संसाधनों की तुलना में जनसंख्या की कमी होने पर भी नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होगा।
- यदि किसी देश में आर्थिक संसाधनों के अनुरूप एवं पर्याप्त रोजगार के अवसर की उपलब्धता, शिक्षा व स्वास्थ्य की बेहतरीन सुविधा युक्त, कुशल जनसंख्या वृद्धि, सकारात्मक प्रभाव के रूप में देश की समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहण करेगी।
- मानव पूंजी : पिछले कुछ वर्षों में व्यवसायों में संबंधित कर्मचारियों और स्टाफ के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्दों में परिवर्तन आया है। वर्तमान में हम 'कर्मचारी वर्ग' से 'मानव संसाधन' और 'मानव पूंजी' की ओर उन्मुख हुए। मानव पूंजी व्यक्ति के ऐसे गुणों को व्यक्त करती है जो आर्थिक संदर्भ में उत्पादक होते हैं। यह श्रम में निहित उत्पादक कौशल और तकनीकी ज्ञान की पूंजी को संदर्भित करता है।
- इसी परिपेक्ष में 1960 के पश्चात् अपेक्षाकृत अधिक आबादी वाले देशों (चीन, भारत, ब्राजील) ने जनसंख्या को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कौशल के माध्यम से उन्हें एक मानव संसाधन ढालकर अपना सामाजिक, आर्थिक विकास कर जनसंख्या संबंधित निराशावादी दृष्टिकोण को खारिज करते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बनाई।

जनसांख्यिकी (Demography)

जनसांख्यिकी से आश्रय जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन से है, जिसमें जनसंख्या के आकार में परिवर्तन, जन्म, मृत्यु, प्रवसन के प्रतिरूप, जनसंख्या की संरचना एवं संगठन (स्त्रियों, पुरुषों व विभिन्न आयु वर्ग के लोगों का अनुपात)

- **आकरिक जनसांख्यिकी :** मुख्यतः जनसंख्या परिवर्तन के संघटकों के विश्लेषण और मापन से संबंधित है। इसके अंतर्गत मात्रात्मक विश्लेषण पर विशेष ध्यान आकर्षित किया जाता है। गणितीय गणना के माध्यम से जनसंख्या की वृद्धि एवं उसके गठन में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।
- **सामाजिक जनसांख्यिकी :** जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्षों पर विचार किया जाता है। जनसंख्या की संरचनाओं और परिवर्तन के व्यापक कारणों का अध्ययन एवं सामाजिक प्रक्रियाएँ और संरचनाएँ जनसांख्यिकी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती है।
- भारत में प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर जनगणना की जाती थी।
- **सर्वेक्षण :** भारत में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO), गांवों एवं कस्बों में स्थित परिवारों के सामाजिक, आर्थिक, जनसांख्यिकीय, कृषि और औद्योगिक विषयों से संबंधित सर्वेक्षण करने वाला एक विशिष्ट संगठन है। इसका कार्य विकासात्मक नियोजन हेतु महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सांख्यिकीय आंकड़े एकत्रित करना है।

जनसंख्या का वितरण और घनत्व

जनसंख्या वितरण से आशय है कि भू-भाग पर लोगों के निवास वितरण से है। सामान्यत : विश्व की 90% जनसंख्या केवल 10% भूभाग का निवास करती है।

जनसंख्या घनत्व : जनसंख्या घनत्व को प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह किसी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या

वितरण को दर्शाने का अधिक उपर्युक्त तरीका है। विशेष रूप से तब जनसंख्या समान रूप से वितरित हो।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। पिछले 60 वर्षों में इसमें 265 व्यक्ति प्रति किमी. की नियमित वृद्धि हुई।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक -

(1) जल की उपलब्धता : जल जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कारक है। अतः लोग उन स्थानों पर निवास को प्राथमिकता देते हैं जहां मीठा एवं स्वच्छ जल आसानी से उपलब्ध हो, यही कारण था कि सिंधु घाटी सभ्यता आदि नदियों के किनारे विकसित हुई।

(2) भू - आकृति : सामान्य व्यक्ति समतल मैदान एवं कम ढलान वाले क्षेत्रों में रहने को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि यहां कृषि आसानी से की जा सकती है। एवं सड़कों के सरलतम निर्माण में परिवहन के विस्तार के कारण उद्योगों के स्थापित होने से रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

(3) जलवायु : अत्यधिक शीत व उष्ण जलवायु में जीवन का निर्वाह प्रायः कठिन होता है। अतः यहाँ अल्पतम जनसंख्या पाई जाती है एवं शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र जहां जलवायु का परिवर्तन कम हो, यह निवास के लिए उपयुक्त रहता है।

(4) मृदाएँ : कृषि एवं इससे संबंधित कार्यों के लिए उपजाऊ मृदा अत्यधिक आवश्यक है। अतः उपजाऊ दोमट मृदा वाले क्षेत्र में अधिक व्यक्ति निवास करते हैं क्योंकि ये मृदाएँ गहन कृषि के लिए अनुकूल रहती है।

2. आर्थिक कारक -

(1) खनिज : खनिज निक्षेपो से युक्त क्षेत्र उद्योगों को बढ़ावा देते हैं तथा खनन और औद्योगिक गतिविधियाँ रोजगार के अवसर का निर्माण करती हैं। अतः अर्ध कुशल एवं अकुशल श्रमिक इन क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं।

(2) नगरीकरण : नगर रोजगार के बेहतर अवसर, शिक्षा एवं चिकित्सा सुविधा तथा परिवहन एवं संचार के बेहतर साधन प्रदान करता है। बेहतर जन सुविधाएं और नगरीय जीवन के प्रति आकर्षण लोगों को नगरीय क्षेत्र की ओर प्रवास को आकर्षित करता है।

(3) औद्योगिकरण : भी रोजगार के माध्यम से लोगों को आकर्षित करता है।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक कारक

→ कुछ स्थान धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के कारण व्यक्तियों को आकर्षित करते हैं तथा सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से अशांत क्षेत्र क्षेत्र व्यक्ति विस्थापित होना चाहते हैं। कई बार सरकार अधिक जनसंख्या वाले स्थानों से कम जनसंख्या वाले स्थानों पर प्रवास को प्रोत्साहित करती है।

जनसंख्या परिवर्तन से संबंधित निर्धारक

→ किसी भी देश की जनसंख्या परिवर्तन निम्न तीन कारक पर निर्भर करती है। जन्म दर, मृत्यु दर एवं देश छोड़कर जाने वाले व्यक्ति एवं देश से आने वाले व्यक्तियों की संख्या।

(1) **प्रजननता (Fertility)** प्रजननता जनसंख्या वृद्धि का महत्वपूर्ण निर्धारक है।

→ **अशोधित जन्म दर :** प्रजननता की महत्वपूर्ण माप है जिसमें केवल जीवित जन्मे बच्चों की गणना की जाती है. एक कैलेंडर वर्ष के दौरान जन्मे जीवित बच्चों की संख्या को उस वर्ष के मध्य की कुल जनसंख्या में विभाजित कर दी जाती है अशोधित जन्म दर को प्रायः 1000 जनसंख्या पर अभिव्यक्त किया जाता है।

→ **सामान्य प्रजनन दर :** यह किसी दी गई समयावधि में 15-49 वर्ष की आयु वाली की प्रति 1000 महिलाओं पर जन्म दिए गए जीवित बच्चों की संख्या है।

→ **सकल परिजन दर (TFR) :** प्रजनन दर से तात्पर्य ऐसे जीवित बच्चों(जन्म लेने वालों) की संख्या जो एक स्त्री जन्म देती है और वह प्रजनन की पूरी समयावधि में जीवित रहती है। और इस आयु वर्ग के प्रत्येक खंड में इतने बच्चों को जन्म देती है।

उच्च प्रजननता के निर्धारक -

(1) धार्मिक विचारधारा एवं विवाह संस्था का सार्वभौमीकरण।

(2) शीघ्र विवाह, बाल विवाह एवं शीघ्र गर्भधारण।

(3) भारतीय संस्कृति में पुत्र को वरीयता देने की प्रथा का गहराई से व्याप्त होना।

(4) महिलाओं में प्रजनन के संबंध में आत्मनिर्णयन के अधिकार न होना।

(5) उच्च शिशु एवं बाल शिशु मृत्यु दर (स्वास्थ्य का निम्न स्तर, निम्न पोषक स्तर तथा निर्धनता भी) भी परिवार के आकार को बढ़ाने में योगदान देती हैं।

(6) गर्भधारण को नियंत्रित करने के तरीकों को ना बनाया जाना।

उच्च प्रजननता के निहितार्थ -

(1) महिलाएँ अपने प्रजनन काल के सर्वाधिक समय में संतानोत्पत्ति एवं उनके पालन-पोषण के कारण उन्हें अपने आत्म-विश्वास एवं अभिव्यक्ति से संबंधित विकास के अवसर से वंचित रह जाती हैं।

(2) उच्च प्रजननता के कारण मां व उसके बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, एवं शारीरिक एवं भावात्मक दुर्बलता का कारण होती है।

(3) उच्च प्रजननता के कारण परिवार के आर्थिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ने के कारण प्रायः बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधित मूल आवश्यकताओं से वंचित होना पड़ता है।

(2) मृत्यु दर (Mortality)

→ **अशोधित मृत्यु दर :** एक निश्चित कैलेंडर वर्ष में किसी क्षेत्र के अनुमानित जनसंख्या के आधार पर प्रति 1000 व्यक्तियों पर होने वाली पंजीकृत मृत्युओं की संख्या होती है।

→ **जन्म के समय जीवन प्रत्याशा :** जीवन प्रत्याशा नवजात शिशुओं के जीवित रहने के संभावित वर्षा की औसत संख्या है। (जबकि इस अवधि के दौरान देश में प्रचलित आयु वशिष्ठ मृत्यु दरों के अनुरूप मृत्यु का जोखिम भी मौजूद रहता है।

→ **शिशु मृत्यु दर :** जनसांख्यिकी में 0-1 वर्ष के बच्चों को शिशु में शामिल किया जाता है। भारत जैसे देश में जहां स्वास्थ्य सुविधाएँ निम्न स्तरीय होने के कारण कुल मृत्यु में शिशु का योगदान अधिक है इसलिए प्रायः शिशु मृत्यु दर के प्रायः देश की सामाजिक, आर्थिक स्थिति व जीवन की गुणवत्ता के संकेतक के रूप में देखा जाता है।

(3) प्रवासन (Migration)

जन्म या मृत्यु के अतिरिक्त संख्या परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक प्रवासन है। प्रवासन को संसाधनों व जनसंख्या के मध्य बेहतर संतुलन के रूप में देखा जा सकता है। प्रवासन अस्थायी, स्थायी व मौसमी हो सकता है।

प्रवास के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं आंतरिक प्रवाह हुआ भारी प्रवास

1. **आर्थिक प्रवास :** यह एक देश की सीमाओं के अंदर व्यक्ति के आगमन से संबंधित है जैसे - राज्य व राज्य के मध्य, जिलों के मध्य, नगरों या गांव के मध्य।

2. **ब्राह्य / अंतर्राष्ट्रीय प्रवास :** दो देशों के मध्य प्रवास से संबंधित है।

→ आप्रवास /Immigration एवं उत्प्रवास (Emigration) : आप्रवास किसी अन्य देश से देश में प्रवास तथा उत्प्रवास अपने देश से अन्य देश में प्रवास के संबंध में प्रयुक्त होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि

→ जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि = जन्म - मृत्यु

→ जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि = जन्म - मृत्यु आप्रवास - उत्प्रवास

अतः जनसंख्या वृद्धि धनात्मक, ऋणात्मक व उदासीन हो सकती है।

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत

यह सिद्धांत किसी देश की जनसंख्या एवं उसके आर्थिक संबंधों के आधार पर इसके स्वरूप के परिवर्तन का संकेत देता है एवं इस प्रक्रिया के अंतर्गत 3 चरणों की सूचना देता है।

1. **विकास पूर्व अवस्था :** इस अवस्था में शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधित सुविधाओं के अभाव में जन्म दर एवं मृत्यु दर पर दोनों ही उच्च रहती है तथा दोनों में अंतर रहता है अतः धीमा जनसंख्या वृद्धि का चरण होता है किंतु यदि इस अवस्था में कोई महामारी आने पर जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक हो सकती है।

2. **विकास की अवस्था :** इस अवस्था में शिक्षा व स्वास्थ्य व अन्य सुविधाओं में अपेक्षाकृत सुधार के कारण मृत्यु दर में कमी आती है व जन्म दर उच्च

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/dy0fu7

Online order - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083